साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : +91-11-23386626-28, फ़ैक्स : +91-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi–110001
Phone: +91-11-23386626-28, Fax: +91-11-23382428
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website: http://www.sahitya-akademi.gov.in

रिपोर्ट

'दुखांतक दौरां दा पंजाबी साहित्य' विशय पर परिसंवाद संपन्न

साहित्य अकादेमी और दयाल सिंह सांध्य कालेज के संयुक्त तत्त्वावधान में 'दुखांतक दौरां दा पंजाबी साहित्य' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद दयाल सिंह सांध्य कालेज के पंजाबी विभाग में दिनांक 12 नवंबर 2018 को आयोजित हुआ।

अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी में संपादक अनुपम तिवारी ने अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पंजाब और पंजाबी साहित्य के लिए दुखांतक दौर बहुत विस्तृत कालखंड तक पसरा हुआ है क्योंकि भारत पर जितने भी आक्रमण हुए उनका सामना सबसे पहले पंजाब से ही हुआ। उन्होंने कई पंजाबी कृतियों और लेखकों का जिक्र करते हुए कहा कि देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भी पंजाबी साहित्य, विशेषकर कविता ने निर्णायक भूमिका अदा की है। पंजाब और पंजाबी साहित्यकारों ने तमाम विप्लवों, दंगों और नरसंहारों के विष को पीकर भी आपसी सौहार्द, सद्भाव और मानवतावादी मूल्यों कर रक्षा की है। आरंभिक वक्तव्य देते हुए प्रख्यात पंजाबी साहित्यकार रवि रविंदर ने बताया कि पंजाबी भाषा में पंजाब के दुखांतक दौर और उसके साहित्य के बारे में यह पहला परिसंवाद आयोजित हो रहा है। उन्होंने कहा कि चिंता इस बात की है कि अभी तक हम पंजाब की विस्तृत त्रासदी के दौर के साहित्य को पाठ्यक्रम का हिस्सा तक नहीं बना सके हैं।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजिका एवं प्रख्यात कवयित्री वनीता ने कहा कि प्रत्येक दुखांत में औरत सबसे ज्यादा संताप भोगती है। साहित्य में इसके बारे में संवेदनशील होना जरूरी है। प्रख्यात आलोचक और लेखक मनमोहन ने बीज वक्तव्य में इस ओर भी ध्यान आकर्षित किया कि अभी तक हम दुखांतक दौरों का ऐतिहासिक दस्तावेज भी नहीं बना सके हैं। इन दौरों की सँभाल करना अति आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि जसपाल कौर ने अपने वक्तव्य में दुखांतक दौरों के पंजाबी साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता कर रहे पंजाबी विश्वविद्यालय के सीनियर फेलो एवं प्रख्यात विद्वान दीपक मनमोहन ने सभी वक्तव्यों पर अपनी सुचिंतित प्रतिक्रिया देते हुए अपने कुछ मार्मिक संस्मरण भी सुनाए। उन्होंने कहा कि पंजाबी में 'आपबीती' और 'जगबीती' साहित्य का लंबा इतिहास है। दुखांत का सामना करने वाले पंजाबी सूरमे हैं जो दुखांत से उभरना जानते हैं। इसका सबूत उन्होंने देश के विभाजन और पंजाब संकट जैसे काले दौरों के बावजूद अपनी प्रगति की रफ्तार को और तेज करके दिया है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में कुछ लोगों ने जो नशे का रास्ता अपनाया है, यह भी एक दुखांत है, जिससे सभी पंजाबियों को सचेत रहने की आवश्यकता है।

उद्घाटन सत्र के बाद दो विचार सत्र आयोजित हुए। पंजाबी साहित्य और विभाजन विषयक पहले सत्र की अध्यक्षता मोहनजीत ने की तथा सतनाम सिंह जस्सल, गुरमुख सिंह, कुलवीर और हरविंदर सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरा सत्र 'पंजाब त्रासदी का पंजाबी साहित्य' विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता बलवीर माधोपुरी ने की तथा वनीता, नरविंदर कौशल, रविंदर सिंह और पृथ्वीराज थापर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों विचार सत्रों में प्रस्तुत आलेखों में पंजाबी कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि के हवाले से विद्वानों ने एक सुर में कहा कि पंजाबी में जिस ढंग से दोनों दुखांत पेश होने चाहिए थे उसके बारे में बहस की पूरी गुंजाइश है और इस साहित्य को विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी पहुँचना बहुत जरूरी है।

दयाल सिंह कालेज के प्राचार्य पवन कुमार शर्मा ने साहित्य अकादेमी के इस प्रयत्न की प्रशंसा की और कहा कि अभी भी इस विषय पर निशानदेही की आवश्यकता है। पंजाबी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष भाई मनिंदरपाल सिंह ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संखलन पृथ्वीराज थापर ने किया। इस परिसंवाद में दिल्ली की पंजाबी संस्थाओं के सदस्यों, दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और शोधार्थियों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की।